International Journal of Fundamental & Applied Research
Website : www.ijfar.org ,(ISSN- 2320-7973 Volume-6 Issue -1+2 Month – April + May 2018 pp. (9 – 10)

मन्नू भण्डारी की कहानियॉ–हिन्दी कहानी को योगदान

चंदा मोदी,
सहायक प्राध्यापक,
आनंद विहार कॉलेज भोपाल

सार संक्षेप

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी में आधुनिकता की चुनौतियों को कई रूपों में स्वीकार किया गया हैं। विभिन्न रूपों का मार्मिक चित्रण करने में महिला कथाकारों में मन्नू भण्डारी एक सफल लेखिका हैं और यही वजह है कि महिला कहानीकारों में सबसे बड़ा साहित्यिक योगदान इनका है। उनको कहानी लेखिका के रूप में ही सर्वाधिक ख्याति प्राप्त हुई है, उन्होंने समकालीन कहानीकारों में विशिष्ट स्थान बनाया है। साहित्य जगत में उनका आगमन कहानी पत्रिका में प्रकाशित **''मैं हार गई''** कहानी से हुआ, इसके बाद उन्होंने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। मन्नूजी पारिवारिक और सामाजिक परिवेश में नारी मन की टूटन एवं घुटन, पुरूष के मन में उठने वाले संदेह एवं ईर्ष्या भावना आदि को अपनी कहानियों में अभिव्यक्ति प्रदान की है, वहीं दूसरी ओर कहानियों में आधुनिकता की चुनौतियों, कुंठा, संत्रास, यौन चित्रण, अजनबीपन, अंतर्दन्द्वता, पश्चिमीकरण, राजनीतिक फूहड़ता तथा आधुनिकता से उत्पन्न नई नैतिकता की धारणा का चित्रण अपनी कहानियों में किया है और यही वजह है कि उनकी कहानियों में जीवन स्थितियों का जीवंत चित्र उपस्थित होता है। उनकी कहानियॉ मध्यमवर्गीय विवशताओं की कहानियॉ है जिनमें पात्र कुछ न कर पाने की स्थिति में रहते हैं, उनमें एक प्रकार की निरीहता और विसंगतियों के साथ समझौता करने का भाव स्पष्ट दिखाई देता है। अतः इस प्रकार मन्नू भण्डारी की कहानियों ने हिन्दी कहानी को महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

कथावस्तु

मन्नूजी सही अर्थो में आधुनिकता के महानगरीय परिवेश की कहानी लेखिका हैं। इसलिए महानगरीय जीवन से संबद्ध सामाजिक, पारिवारिक और मध्यमवर्गीय जीवन की विडंबनाएं हीं उनके कहानी साहित्य की वस्तु है। फलतः जीवन की विसंगतियॉ, परंपरागत संबंधों की टूटन, सुख की तलाश में भटकते स्त्री–पुरूषों के त्रासद अैर दमघोंटू स्थितियॉ, सेक्स स्वेच्छाचार की बढ़ती प्रवृति, दाम्पत्य संबंधों तनाव, संदेह, ईर्ष्या, घुटन और टूटन आदि स्थितियों का अंकन इन्होंने अपनी कहानियों में उभारा है। इसके अलावा ग्रामीण और राजनैतिक परिवेश को छूने के साथ ही नारी स्वंतत्रता के लिए जहां पहली आवश्यकता आर्थिक स्वतंत्रता को माना है तो वही दूसरी और उन्होंने विवाह को परिवार की रीढ़ निरूपित किया है।

वे आधुनिक चेतना की समर्थ कथाकार हैं। उन्होंने अपने समग्र साहित्य में नारी अस्तित्व और उसकी अस्मिता की खोज की है। जीवन यात्रा में निकले हुए और इस यात्रा पर हर प्रकार की विडंबनाओं से गुजर रहे आज के मानव की पीड़ा को मार्मिक और अनुभूतिपूर्ण अभिव्यक्ति प्रदान की है। आज के समूचे मध्यमवर्गीय समाज की विभीषिका, टूटन, बनते–बिगड़ते जीवन की टकराहट से उत्पन्न विडंबनाओं को साफ–साफ उभारने में सफल हुई हैं। वे कथानक का संयोजन कुछ इस प्रकार करती है। कि सादगी लुभाती है और पाठक पर सीधा प्रभाव छोड़ती है। यही कारण है कि उन्हें जिस तेजी के साथ साहित्य की दुनिया में प्रतिष्ठा प्राप्त हुई वह प्रायः कम लोगों को ही मिल पाती है।

कहानी में पात्रों का बहुत महत्व होता है क्योंकि वे कहानी के एक छोटे से प्लॉट को विस्तार देने और उद्देश्य तक पहुंचाने में अनिवार्य भूमिका निभाते हैं। चूंकि मन्नू भण्डारी परिवार, समाज विशेषकर महानगरीय जीवन की लेखिका हैं इसलिए उनके पात्र अपने आसपास के होते हैं। स्त्री पात्रों के साथ–साथ अन्य पात्र इनकी कहानियों में स्वाभाविक रूप से आए हैं। कहानियॉ पढ़ते हुए कहीं यह अनुभव नहीं होता है कि पात्रों का भराव किया गया है।

कहानी की रचना में यद्यपि संवाद या कथोपकथन की नितांत आवश्यकता नहीं होती है फिर भी चुटीले संवाद कहानी में प्रभाव उत्पन्न करने के साथ पाठक की जिज्ञासा बढ़ाते है। मन्नू भण्डारी भी इनसे अछूती नहीं है। इनकी कहानियॉ ऐसे चुटीले संवादों से भरी–पूरी है। कहानी में जहॉ छोटे–छोटे संवाद चरित्र को उजागर करते हैं वहीं गंभीर विचार के परिचायक भी होते हैं। मनःस्थितियों का चित्रण भी संवाद के माध्यम किया है।

भाषा रोजमर्रा की और जनजीवन से जुड़ी हुई है, लेकिन इन्होंने संवादों में उसका इतना सरलीकरण भी नहीं किया है कि वे किसी तरह से कहानी के सौंदर्य और मूल उद्देश्य को क्षतिग्रस्त करें। ऐसी भाषा पर अधिकार जिन कथाकारों जिन कथाकारों के पास होता है वे पाठक के मन में सरलता से अपनी जगह बना लेते हैं ऐसा कहानियों की सादगीपूर्ण भाषा शैली के कारण ही है। आम मुहावरे और विचारात्मक सूत्र, टिप्पणियॉ इत्यादि भी इनकी कहानियों में मिलती है। संवादों में कहीं बनावटीपन या पात्रों पर थोपे जाने का अहसास पाठक को नहीं होता है। इस अर्थ में मन्नूजी के पास जो भाषा शिल्प है वह उन्हें अन्य कथाकारों से अलग करता है।

कहानी रचना में देश–काल, वातावरण का बहुत महत्व होता है। यदि कोई लेखक इसका निर्वाह नहीं कर पाता है तो उसकी कहानियॉ यथार्थ से परे अनुभव होती है। इनकी

Corresponding Author : email : chandamodi 61@gmail.com

International Journal of Fundamental & Applied Research
Website : www.ijfar.org ,(ISSN- 2320-7973 Volume-6 Issue -1+2 Month – April + May 2018 pp. (9 – 10)

कहानियों में देशकाल और वातावरण के अनुसार परिस्थितिवश भाषा की प्रधानता मिलती है। देशकाल एवं परिस्थितियों के अनुसार इनका भाषिक अंदाज भी बदला हुआ है जिससे कहानी के कथ्य सम्प्रेषण में बड़ी सहायता मिलती है। इनमें गत्यात्मक बिम्बों, प्रतीकों तथा संकेतों की आयोजना हुई है। संरचना की दृष्टि से इनकी कुछ कहानियॉ मानसिक जगत पर उहापोह की पुनरावृत्ति करती है। यह पुनरावृत्ति अनेक स्थलों पर रचना को कमजोर करती है फिर भी यह कहा जा सकता है कि ''यही सच है'', ''बंद दरवाजों के साथ'' और ''ऊँचाई'' कहानी को छोड़कर विस्तार के पक्ष में अधिक दृढ़ता से नहीं कहा जा सकता है। मन्नूजी के कथा विस्तार और घटनाक्रम से यह आभास सहज ही हो जाता है कि अंत क्या होगा। इस दृष्टि से ''यही सच है '', ''छत बनाने वाले'' , ''ऊँचाई'', ''क्षय'' आदि कहानियॉ उल्लेखनीय हैं।

कहानी में उद्देश्य प्रमुख होता है चाहे कहानी छोटी हो या बड़ी। कहानीकार घटनाक्रम को विस्तार देते हुए पात्रों के माध्यम से अंत में अपना उद्देश्य या प्रमुख विचार स्पष्ट करता है। मन्नूजी की कहानियॉ वैचारिक उद्देश्य को लिए हुए हैं। इसका तात्पर्य यह नहीं कि वे किसी राजनैतिक विचारधारा से प्रतिबद्ध लेखिका है। एक तटस्थ लेखिका के रूप में वे अपनी सामाजिक भूमिका अदा करती हैं। वे नई कहानी आंदोलन के सूत्रधारों में से हैं। उनकी कहानियॉ अनुभूति की प्रामणिकता एवं रचनात्मक स्तर की विविधता लिए हुए होने के कारण एक अलग ही पहचान लिए हुए हैं। उनकी गहरी संवेदनशीलता, अनुभव की सच्चाई, प्रस्तुति कौशल आदि ने उन्हें सहज की लोकप्रिय बनाया है। यद्यपि आरंभ में वे स्त्री–पुरूष संबंधों के सीमित दायरों में बधी रही पर आगे चलकर सामाजिक आयामों से भी जुड़ गई । उनकी कहानियों के इस निरंतर विकासात्मक दृष्टि ने जहॉ उन्हें समकालीन अन्य कथा लेखिकाओं से आगे निकाला है वहीं उनके कहानीकार को दुहराव से बचाया है। आज जब आलोचक हिंदी कथा लेखिकाओं से यह शिकायत करता है कि वे नारी पुरूष के संबंधों तक सीमित रहकर अनुभव के सीमित दायरे में केंद्रित हो गई है तो उन्हें मन्नू को इनसे अलग रखना पड़ता है। ''यही सच है '' और ''त्रिशंकू'' कहानी संग्रह की तमाम कहानियॉ संबंधों के विघटन की साक्षी हैं। वे गहरे सामाजिक संदर्भो की पहचान कराती हैं। ''रानी मां का चबूतरा'' कहानी रूढ़ियों को व्यक्त करती है। ''अकेली'' व्यक्ति के अकेलेपन को भुलाने के किए लिए गए प्रयासों से जुड़ी संपूर्ण सामाजिक संदर्भो की कहानी है। ''क्षय'' आत्मसम्मान और अभिजात्य वर्ग के बीच चलने वाले संघर्ष की अत्यंत ही एक करूणामयी परिणति है। ''एखाने आकाश नाई'' में गांव और शहर के मध्यमवर्गीय परिवारों की मानसिक टूटन का आंकलन है। ''सजा'' में आधुनिक न्याय पद्धति की विसंगतियों पर करारा व्यंग्य है। ''मजबूरी'' कहानी में पीढ़ियों में अंतर और ''यही सच है'' में दो प्रेमियों को लेकर मन में उपजे द्वन्द्व का चित्रण है। ''शायद'' कहानी में दो यांत्रिक परिवेशों के बीच फंसे और अस्तित्वहीन एक व्यक्ति की कहानी है। ''खोटे सिक्के'', ''तीसरा हिस्सा'' और ''अलगाव'' नामक कहानियों में सामाजिक व्यंग्य उभरकर आए हैं।

इस तरह मन्नूजी के कथा साहित्य का केंद्र समाज और व्यक्ति है। वे प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से वास्तविक धरातल से जुड़ी हुई है। इसलिए इनकी रचनाओं में वास्तविकता विद्यमान है। और यही वजह है कि कहानी को नई दिशा देने वाले कथाकारों में मन्नू भण्डारी पंक्ति के रचनाकार के रूप में प्रतिष्ठित हैं। इन्होंने सस्ती एवं भावुकतापूर्ण नारी जीवन की कहानियॉ नहीं लिखी हैं। वरन् जिंदगी के सीधे और सहज ढंग से आंकने वाली कहानियॉ लिखी हैं– रोचक और पठनीय भी। आधुनिकता को पेंशन के रूप में नहीं, हमारी बदलती परिस्थितियों के संदर्भ में उन्होंने ग्रहण किया है।

सहज और बेबाक बयानी ने मन्नूजी को साहित्य जगत में एक विशिष्ट स्थान दिया है। उनके रचना संसार में बनावट और बुनावट के स्थान पर सहज गति है उनकी रचनाओं में जटिल और भयावह वातावरण बना देने वाला भाषातंत्र न होकर अनुभूति को उसी खण्ड में व्यक्त करने वाला है। इनका पात्र या तो रोटी की जुगाड़ में व्यस्त है या संघर्ष कर रहा है। पाठक की अपेक्षा में जीवन का जो चित्र बनता है वह स्वाभाविक होता है इसलिए पाठक एक बार कहानी पढ़ना शुरू करता है तो अंत तक बंधा रहता है।

बौद्धिक आडंबर और चुटीले नारों से हिंदी कहानी को मुक्त कराने में वे प्रथम पंक्ति की लेखिका हैं। तेजस्वी विचार, रूढिमुक्त साहस और घरेलू आत्मीयता की सहजता इनकी सबसे बड़ी शक्ति है और इसीलिए वे सस्ती, घटिया और घिसी–पिटी हुए बिना आज भी खूब पढ़ी जाने वाली बहुचर्चित कहानी लेखिका है। बेहद सहज और सीधे पाठकों तक पहुचने वाली इनकी कहानियॉ अपने नए कोणों, बेबाक चित्रण और निभ्रान्त निगाह के कारण बार–बार, हर स्तर और हर क्षेत्र में चर्चित हुई हैं। एक वाक्य में यदि कहना हो तो कह सकते है कि– **मन्नूजी परिवार और परिवार के आंतरिक, आत्मीय संबंधों की सूक्ष्य किंतु गंभीर श्रेष्ठ लेखिका हैं, जो कहानी लिखती नहीं, पाठक को घनिष्ठता में लेकर उनकी कहानी लिखती है।**

संदर्भ ग्रन्थ सूची :–

1. मन्नू भण्डारी की कहानियों के प्रमुख पात्र –प्रदीप सी लाड़ पृष्ठ क्र0–60
2. मन्नू भण्डारी की कहानियों के प्रमुख पात्र –प्रदीप सी लाड़ पृष्ठ क्र0–61
3. वर्तमान साहित्य, कहानी महाविशेषांक पृष्ठ क्र0–248,249
4. साक्षात्कार, अंक 154/अक्टूबर, 1992 पृष्ठ क्रमांक–17
5 साक्षात्कार, अंक 154/अक्टूबर, 1992 पृष्ठ क्रमांक–10
6. देशबंधु, दैनिक पत्रिका 2 जून, 1977
7. कथाकार मन्नू भण्डारी–अनीता राजूरकर पृष्ठ क्रमांक–13
8. औरों के बहाने–राजेन्द्र यादव पृष्ठ क्रमांक–64

Corresponding Author : email : chandamodi 61@gmail.com